इकाई 10 समास प्रकरण – भाग 2

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 समास –"तत्पुरुषः" सूत्र से "शाकपार्थिवादीनां सिद्धये इत्यादि" वार्तिकपर्यन्त

10.3 कतिपय उदाहरणों की रूपसाधन–प्रक्रिया

10.4 सारांश

10.5 शब्दावली

10.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.7 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- तत्पुरुष समास के बारे में जानेंगें।
- तत्पुरुष समास के भेदों के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगें।
- तत्पुरुष के ही भेद कर्मधारय तथा उसके भेद द्विगु के बारे में भी आप जान पाएँगें।
- कर्मधारय जिसे कि विशेषण समास कहते हैं के बारे में वितार से ज्ञान प्राप्त होगा।
- कर्मधारय के भेद द्विगु के बारे में जान पाँएगें कि द्विगु की भी तत्पुरुष संज्ञा करने का क्या प्रयोजन है।
- विशेष रूप से तत्पुरुष प्रकरण के सूत्रों को (जिनमें कर्मधारय व द्विगु के सूत्र भी अन्तर्भूत हैं) विस्तार से सोदाहरण विवेचन के साथ पढ़ेंगें।
- तत्पुरुष, कर्मधारय व द्विगु समास के विभिन्न उदाहरणों को रूपसिद्धि प्रक्रिया के माध्यम से सिद्ध करने में समर्थ हो पाएँगें।

10.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रों आपके पाठ्यक्रमानुसार इस इकाई में आपको तत्पुरुष समास प्रकरण के बारे में अध्ययन करना है। जैसा कि पूर्वतन इकाई में आपको बताया गया था कि तत्पुरुष प्रायः उत्तरपदार्थप्रधान होता है। साथ ही पूर्वतन इकाई में आपने समास का सामान्य परिचय प्राप्त करते हुए समास के विभिन्न भेदों के बारे में स्थूलतया परिचय प्राप्त करके प्रथम भेद अव्ययीभाव समास विधायक सूत्रों का तथा उनके उदाहरणों का अध्ययन कर विस्तृत परिचय प्राप्त किया। अव्ययीभाव प्रकरण में ही कतिपय समासान्त प्रत्यय भी हैं जो कि पाठ के अन्त में यथाक्रम व्याख्यायित किए गए। तो इस प्रकार

समास के अन्यतम भेद अव्ययीभाव समास के बारे में विस्तार से सोदाहरण अध्ययन करवाकर आपको इस इकाई में तत्पुरुष समास के विधायक सूत्रों का अध्ययन कराया जाएगा। तत्पुरुष समास का विधान द्वितीया विभक्त्यन्त से लेकर सप्तमी विभक्त्यन्त तक किया गया है। अर्थात् द्वितीयान्त से सप्तम्यन्त तक का सुबन्त के साथ समास का विधान किया है अतः इनको क्रमशः द्वितीया–तत्पुरुष, तृतीया–तत्पुरुष, चतुर्थी–तत्पुरुष, पञ्चमी–तत्पुरुष, षष्ठी–तत्पुरुष, सप्तमी–तत्पुरुष नाम से जाना जाता है।

तदुपरान्त तत्पुरुष में ही जब दो प्रथमान्त पदों का समास विधान किया जाता है तो वह समानाधिकरण समास या विशेषणसमास कहलाता है। इसे ही तत्पुरूष के भेद कर्मधारय के रूप में जाना जाता है। इसके साथ ही कर्मधारय का अवान्तर भेद कहा गया है द्विगु। जो कि संख्यापूर्वपद होने पर होता है जैसा कि सूत्र है "संख्यापूर्वो द्विगुः"। इसी की तत्पुरुष संज्ञा भी की गई है। जिसाका प्रयोजन समासान्त इत्यादि है। इसका विवेचन विस्तार से पाठ के मध्य किया जाएगा।

10.2 समास –"तत्पुरुषः" सूत्र से "शाकपार्थिवादीनां सिद्धये इत्यादि" वार्तिकपर्यन्त

प्रिय छात्रों इस इकाई में हम "तत्पुरुषः" सूत्र से "शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंक्यानम्" वार्तिकपर्यन्त आने वाले सभी सूत्रों का क्रमशः अध्ययन करेंगें। यहाँ कुछ बातें ध्यात्व्य है कि द्वितीयादि सप्तमीतत्पुरुष समास व्यधिकरणसमास है क्योंकि यहाँ समस्यमान दोनों पदों में भिन्न–भिन्न विभक्ति का प्रयोग किया है। सुबन्त के साथ जिस विभक्त्यन्त का समास होता है उसे उसी के नाम से जाना जाता है। जैसे द्वितीयान्त का सुबन्त के साथ समास होने पर द्वितीया तत्पुरुष इत्यादि।

इसके विपरीत जहाँ समस्यमान पदों की विभक्ति समान हो वह समानाधिकरण समास कहलाता है। यहाँ प्रथमा विभक्तयन्त का प्रथमान्त के साथ समास किया जाएगा यही विशेषण समास भी कहा जाता है, जो कि कर्मधारय के नाम से प्रसिद्ध है। कर्मधारय में भी विशेषणपूर्वपद कर्मधारय तथा उपमानपूर्वपद कर्मधारय को सोदाहरण जानेंगें।

यदि इसी समानाधिकरण समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो तो द्विगु कहलाता है। जब द्विगु समास समाहार अर्थ में प्रयुक्त होता है तो समाहार (समूह) की प्रधानता होने के कारण सदैव नपुंसकलिङ्ग तथा एकवचन में ही प्रयुक्त होता है। यह सब पाठ में स्पष्ट हो जाएगा।

सूत्र – तत्पुरुषः 2.1.21

सूत्रवृत्ति – अधिकारोऽयं प्राग्बहुव्रीहेः।

सूत्रानुवाद – यह अधिकार सूत्र है "शेषो बहुव्रीहिः" से पूर्व तक इस सूत्र का अधिकार है।

व्याख्या – तत्पुरुषः यह एक पदात्मक सूत्र है। "शेषो बहुव्रीहिः" से पूर्व तक इसका अधिकार क्षेत्र है। अर्थात् "तत्पुरुषः" सूत्र से "शेषो बहुव्रीहिः" तक जिन सूत्रों के द्वारा जिस समास का विधान किया जाएगा उसकी तत्पुरुष संज्ञा होगी।

सूत्र – द्विगुश्च 2.1.23

सूत्रवृत्ति – द्विगुरपि तत्पुरुषसंज्ञकः स्यात्।

सूत्रानुवाद – द्विगु भी तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या – द्विगुः च यह पदच्छेद है। यह सूत्र द्विगु की भी तत्पुरुष संज्ञा का विधान करता है। इसी प्रकरण में आगे तत्पुरुष के अधिकार में "तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च" सूत्र से विहित त्रिविध समास में से जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो उसकी द्विगु संज्ञा "संख्यापूर्वो द्विगुः" सूत्र से की जाएगी।

द्विगु की तत्पुरुष संज्ञा करने का प्रयोजन – यद्यपि आकडारादेका संज्ञा सूत्र के अधिकार के कारण एक की एक ही संज्ञा करनी चाहिए जो पर (अष्टाध्यायी में बाद में पढी हो) हो और अनवकाश हो। तो इस प्रकार द्विगु संज्ञा से तत्पुरुष संज्ञा का बाध हो जाएगा जोकि इष्ट नहीं है। तो क्या प्रयोजन है कि द्विगु की तत्पुरुषसंज्ञा भी करनी चाहिए ? तो इसक समाधान यह है कि एकसंज्ञाधिकार में भी द्विगु की तत्पुरुष संज्ञा भी बनी रहे ताकि तत्पुरुष से "राजाहःसखिभ्यष्टच्" के द्वारा विहित टच्, "तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याऽव्ययादेः" से विहित अच् आदि समासान्त प्रत्यय द्विगु से भी किए जा सके।

सूत्र – द्वितीया श्रिताऽतीत–पतित–गतात्यस्त–प्राप्तापन्नैः। 2.1.24

सूत्रवृत्ति – द्वितीयान्तं श्रितादिप्रकृतिकैः सुबन्तैः सह समस्यते वा, स च तत्पुरुषः। कृष्णं श्रितः कृष्णश्रितः इत्यादि।

सूत्रानुवाद – द्वितीयान्त सुबन्त, श्रित आदि प्रकृति वाले सुबन्तों के साथ विकल्प से समास को प्राप्त करते हैं वह समास तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या – द्वितीया श्रिताऽतीत–पतित–गताऽत्यस्त–प्राप्तापन्नैः यह पदच्छेद है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। सह सुपा सूत्र से सुपा की अनुवृत्ति होती है जो कि वचन विपरिणाम से बहुवचन प्राप्त करता है सुबन्तैः इति। विभाषा, तत्पुरुष अधिकारों की तथा सुप् सुपा से सुप् की अनुवृत्ति पूर्व से है। यहाँ श्रितश्च अतीतश्च पतितश्च गतश्च अत्यस्तश्च प्राप्तश्च आपन्नश्च = श्रिताऽतीतपतितगताऽत्यस्तप्राप्तापन्नाः तैः श्रिताऽतीतपतितगताऽत्यस्तप्राप्तापन्नैः इस प्रकार से इतरेतरद्वन्द्व समास है। यहाँ श्रितादि की श्रितादिप्रकृतिकसुबन्त में लक्षणा की गई है, अन्यथा श्रितादि सुबन्त नहीं है तो उनका सुबन्तैः के साथ सामानाधिकरण्य सम्भव नहीं है। अतः श्रित है प्रकृति जिन सुबन्तों की ऐसा लाक्षणिक अर्थ कर लिया गया। द्वितीया शब्द से प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्याः परिभाषा से द्वितीयान्त का ग्रहण किया है इसी प्रकार सुप् से सुबन्त का। अतः सूत्रार्थ ऐसे सम्पन्न हुआ कि द्वितीयान्त सुबन्त का श्रितादिप्रकृतिक सुबन्तों के साथ विकल्प से समास को प्राप्त करते हैं।

उदाहरण – कृष्णश्रितः – कृष्णं श्रितः इस लौकिक विग्रह में कृष्ण अम् श्रित सु इस अलौकिक विग्रह में "द्वितीया श्रिताऽतीतपतितगताऽत्यस्तप्राप्तापन्नैः" इस सूत्र से तत्पुरुष समास करने पर समासंज्ञा होने पर कृत्तद्धितसमासाश्च सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुपो धातुप्रातिपदिकयोः सूत्र से सुब्लुक् करने पर कृष्णश्रित इस अवस्था में

प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् इस सूत्र से समास विधायक सूत्र में द्वितीया शब्द के प्रथमानिर्दिष्ट होने से द्वितीयान्त की उपसर्जन संज्ञा होने पर उपसर्जनं पूर्वम् सूत्र से द्वितीयान्त का पूर्वनिपात करने पर कृष्णश्रित इस अवस्था में समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय विभक्तिकार्य द्वारा रुत्वविसर्ग होने पर कृष्णश्रितः रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन। 2.1.30

सूत्रवृत्ति – तृतीयान्तं तृतीयान्तार्थकृतगुणवचनेनार्थेन च सह वा प्राग्वत्। शंकुलया खण्डः शङ्कुलाखण्डः। धान्येनार्थो धान्यार्थः। तत्कृतेति किम्? अक्ष्णा काणः।

सूत्रानुवाद – तृतीयान्त सुबन्त, तृतीयान्त के अर्थ द्वारा कृत जो गुण तद्विशिष्ट द्रव्यवाचक सुबन्त के साथ एवं अर्थ–शब्द के साथ विकल्प से समास को प्राप्त करते हैं और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या – यह त्रिपदात्मक सूत्र है। सूत्र का अर्थ स्पष्ट करने के लिए प्राक्कडारात् समासः, सह सुपा तथा तत्पुरुषः की अनुवृत्ति करनी होती है। इस सूत्र मे 'तत्' पद का अभिप्राय सूत्रस्थ तृतीया से है। अतएव 'तत्कृतम्' का अर्थ होगा 'के द्वारा किया हुआ'। इसका अन्वय 'गुणवचनेन' के साथ होता है, 'अर्थेन' के साथ नहीं। गुणवचन शब्द का निर्वचन शब्दावली में विस्तार से करेंगें। "प्रत्यय ग्रहणे तदन्तग्रहणम्" इस परिभाषा से तृतीया में तदन्तविधि होने पर तृतीयान्त का ग्रहण किया जाता है। अब सूत्र का अर्थ होता है– तृतीयान्त अर्थात् तृतीयान्त सुबन्त का तृतीयान्तार्थ कृत–गुणवचनेन = तृतीयान्त के अर्थ के साथ किये गये गुण वाचक सुबन्त के साथ और अर्थप्रातिपदिक के सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है तथा इसको 'तत्पुरुष' कहा जाता है।

उदाहरण – शंकुलाखण्डः– शंकुलया खण्डः इस लौकिक विग्रह में शंकुला टा खण्ड सु इस अलौकिक विग्रह में तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन सूत्र से समाससंज्ञा होने पर पूर्ववत् प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् करने पर शंकुलाखण्ड इस अवस्था में तृतीयान्त का समासविधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने के कारण उपसर्जन संज्ञा तथा उसका पूर्वनिपात करने पर **शंकुलाखण्ड** इस समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा विभक्त्यादिकार्य करने पर शंकुलाखण्डः रूप सिद्ध होता है।

तत्कृतेति किम् ? अब यहाँ विचार किया जाता है कि सूत्र में तत्कृत = तृतीयान्तार्थ कृत अर्थात् 'तृतीयान्तार्थ से किये हुए गुणवचन से' – ऐसा कहने की क्या आवश्यकता थी ? तो इसका समाधान यह है कि तत्कृत ग्रहण करने से सूत्र का अर्थ होगा कि यदि तृतीयान्त का गुणवचन के साथ समास हो तो तृतीयान्तार्थ कृत से ही हो। इस नियम के आधार पर अक्ष्णा काणः में समास नहीं होगा। क्योंकि तृतीयान्त अक्ष्णा आँख से , आँख के द्वारा वह काना नहीं हुआ है। अतः अक्ष्णा और काणः में कारण कार्य सम्बन्ध न होने के कारण यहाँ समास भी नहीं होता है।

सूत्र –कर्तृकरणे कृता बहुलम् 2.1.32

सूत्रवृत्ति – कर्तरि करणे च तृतीया कृदन्तेन बहुलं प्राग्वत्। हरिणा त्रातः हरित्रातः। नखैर्भिन्न नखभिन्नः।

सूत्रानुवाद – कर्ता अथवा करण में जो तृतीया तदन्त सुबन्त (तृतीयान्त) का कृदन्तप्रकृतिक सुबन्त के साथ बहुल प्रकार से समास को प्राप्त करता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या – कर्तृकरणे, कृता, बहुलम् यह इस त्रिपदात्मक सूत्र का पदच्छेद है। तृतीया पद की अनुवृत्ति तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन से होती है। समासः, सुप्, सह सुपा, तत्पुरुषः – ये सब पूर्वतः अधिकृत है। कर्ता च करणं च कर्तृकरणम्, तस्मिन् = कर्तृकरणे, समाहारद्वन्द्वः। तृतीया से तदन्तविधि हो कर तृतीयान्तं सुबन्तम् बन जाता है। इसी प्रकार कृत् प्रत्यय होने के कारण तदन्तविधि से

कृता का भी तदन्तविधि हो कर कृदन्तेन सुबन्तेन या कृदन्त प्रकृतिकेन सुबन्तेन बन जाता है। सूत्रार्थ यह फलित होता है कि – कर्ता या करण कारक में जो तृतीया है तदन्त = तृतीयान्त सुबन्त, (कृता = कृदन्तेन) कृदन्तप्रकृतिक सुबन्त के साथ बहुल प्रकार के समास को प्राप्त होता है।

कर्तृकारक में तृतीयान्त का उदाहरण – हरित्रातः – हरिणा त्रातः इस लौकिक विग्रह में हरि टा त्रात सु इस अलौकिकविग्रह में कर्तृकरणे कृता बहुलम् सूत्र द्वारा बहुल प्रकार से समास हो जाता है। समासविधायक इस सूत्र में अनुवर्तित तृतीया पद प्रथमानिर्दिष्ट है अतः प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से तद्बोध्य हरि टा की उपसर्जनसंज्ञा और उपसर्जनम्पूर्वम् से उस का पूर्वनिपात हो जाने पर हरि टा त्रात सु इस समास समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च प्रातिपदिकसंज्ञा, सुपो धातुप्रातिपदिकयोः द्वारा उस के अवयव (टा और सु) का लुक् करने पर हरित्रात इसकी पुनः एकदेशविकृतमनन्यवत् परिभाषा से प्रातिपदिकत्व तथा प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करके विभक्त्यादि कार्य करके हरित्रातः रूप सिद्ध होता है।

कृद्ग्रहणे गतिकारकपूर्वस्यापि ग्रहणम् (परिभाषा) नखैर्निर्भिन्नः – नखनिर्भिन्नः।

व्याख्या – इस परिभाषा का अर्थ है कि कृत् (कृदन्त) के ग्रहण में गति–कारक पूर्व का भी ग्रहण किया जाना चाहिये। तात्पर्य यह है कि कर्ता और करण अर्थ में विद्यमान तृतीयान्त सुबन्त का गतिकारक पूर्व कृदन्त के साथ भी समास होता है। जैसे – नखनिर्भिन्नः – नखैः निर्भिन्नः इस विग्रह में गतिसंज्ञक नि र्पूर्वक कृदन्त भिन्न के साथ नखैः तृतीयान्त का समास हुआ है। प्रक्रिया नखभिन्न के समान है। केवल समासविधायक सूत्र इस परिभाषा की सहायता से समास का विधान करता है।

सूत्र – चतुर्थी तदर्थार्थ–बलि–हित–सुख–रक्षितैः 2.1.36

सूत्रवृत्ति – चतुर्थ्यन्तार्थाय यत् तद्वाचिना, अर्थादिभिश्च चतुर्थ्यन्तं वा प्राग्वत्। यूपाय दारु – यूपदारु। तदर्थेन प्रकृतिविकृतिभाव एवेष्टः, तेनेह न – रन्धनाय स्थाली।

सूत्रानुवाद – चतुर्थ्यन्त सुबन्त, उस चतुर्थ्यन्त के अर्थ (वाच्य) के लिये जो वस्तु तद्वाचक सुबन्त के साथ एवम् अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित इन सुबन्तों के साथ विकल्प से समास को प्राप्त होता है और वह समास तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

व्याख्या – चतुर्थी, तदर्थ–अर्थ–बलि–हित–सुख–रक्षितैः यह द्विपदात्मक सूत्र का पदच्छेद है। समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः ये सब पूर्वतः अधिकृत हैं।

प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम् के अनुसार चतुर्थी से चतुर्थ्यन्तं सुबन्तम् का ग्रहण होता है। तदर्थञ्च अर्थश्च बलिश्च हितं च सुखं च रक्षितं च तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितानि, तैः तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितः, इतरेतरद्वन्द्वः। तो इस प्रकार सूत्रार्थ फलित होता है – चतुर्थ्यन्त सुबन्त, तदर्थ, अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित इन सुबन्तों के साथ विकल्प से समास को प्राप्त होता है और वह समास तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

तदर्थ से प्रकृतिविकृतभाव का ग्रहण – तदर्थवाचक – में तद् से चतुर्थ्यन्त सुबन्त का ग्रहण किया जाता है। इस प्रकार तदर्थ का अर्थ होता है – चतुर्थ्यन्त सुबन्त के लिये। अभिप्राय यह है कि चतुर्थ्यन्त सुबन्त के लिये जिसका उपयोग किया जाता है उसके वाचक प्रातिपादक के सुबन्त के साथ उस चतुर्थ्यन्त सुबन्त का समास होगा। किन्तु चतुर्थ्यन्त सुबन्त और तदर्थवाचक सुबन्त दोनों में प्रकृति–विकृति भाव होना आवश्यक है। अभिप्राय यह हुआ कि चतुर्थ्यन्त सुबन्त के लिये गृहीत वस्तु से यदि चतुर्थ्यन्त वस्तु में विकार सम्भव होगा तो परस्पर समास होगा, अन्यथा समास नहीं होगा।

उदाहरण – यूपदारु – यूपाय दारु (यज्ञस्तम्भ हेतु लकड़ी), में सुबन्त दारू का उपयोग चतुर्थ्यन्त यूपाय के लिये होता है। यहाँ दारु (लकड़ी) , प्रकृति है और यूपाय विकृति(क्योंकि यूप का निर्माण लकड़ी से ही होता है) है। अतः प्रकृत सूत्र द्वारा समास होकर यूपदारु बनता है।

किन्तु यदि तदर्थवाचक सुबन्त से चतुर्थ्यन्त सुबन्त में कोई विकार न होगा तो समास भी नहीं हो सकेगा जैसे – रन्धनाय स्थाली में तदर्थवाचक सुबन्त स्थली अवश्य है किन्तु स्थाली से 'रांधना' न बनने के कारण प्रकृतिविकृति भाव न होने से समास नहीं होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि 'प्रकृति–विकृतिभाव' दो द्रव्यों में हुआ करता है। द्रव्य और क्रिया में नहीं हुआ करता है। यहाँ स्थाली द्रव्य है और रन्धन क्रिया है। अतः यहाँ समास नहीं होगा।

वार्तिक–अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम् । वार्तिक

वृत्ति – द्विजार्थः सूपः। द्विजार्था यवागूः। द्विजार्थं पयः। भूतबलिः। गोहितम्। गोसुखम्। गोरक्षितम्।

व्याख्या – अर्थ–शब्द के साथ चतुर्थ्यन्त का समास नित्य होता है (नित्य समास होने के कारण यहाँ अस्वपदलौकिक विग्रह होगा) तथा इस समास का लिङ्ग भी विशेष्य के अनुसार होता है। विशेष्य के अनुसार लिङ्ग निर्धारण का कारण यह है कि परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः सूत्र से तत्पुरुष समास में उत्तरपद के अनुसार समास (समस्तपद) का लिङ्ग होता है। अतः यहाँ इस सूत्र से परवल्लिङ्गता को बाधकर विशेष्य के अनुसार समस्तपद का लिङ्गनिर्धारण किया जाता है।

उदाहरण – द्विजार्थः (सूपः) – द्विजाय अयम् इस अस्वपद लौकिक विग्रह में द्विज ङे अर्थ सु इस अलौकिकविग्रह में अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम् इस वार्तिक से चतुर्थ्यन्त का अर्थशब्द से नित्य समास होने पर समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् होने पर चतुर्थ्यन्त के समासविधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने से उसकी(द्विज शब्द की) उपसर्जनसंज्ञा तथा उपसर्जनसंज्ञक का पूर्वनिपात करके

द्विज अर्थ इस अवस्था में सवर्णदीर्घ होकर द्विजार्थ की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करके विभक्ति कार्य करके सूपः इस विशेष्य के पुंल्लिंग होने से समस्त पद भी पुल्लिङ्ग में प्रयुक्त होगा अतः द्विजार्थः रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार स्त्रीलिङ्ग विशेष्य पद होने पर द्विजाय इयम् इस अर्थ में द्विजार्था यवागूः तथा नपुंसकलिङ्ग विशेष्य पद होने पर द्विजाय इदम् इस अर्थ में द्विजार्थं पयः रूप सिद्ध होते हैं। प्रक्रिया सभी की समान है।

सूत्र – पञ्चमी भयेन 2.1.37

सूत्रवृत्ति – चोराद् भयम् – चोरभयम्।

सूत्रानुवाद – पञ्चम्यन्त सुबन्त का भयवाचक सुबन्त के साथ समास होता है वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या – यह द्विपद सूत्र है। पूर्वसूत्रों की तरह यहाँ भी समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः ये सब पूर्वतः अधिकृत हैं। प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम् के अनुसार 'पञ्चमी' से 'पञ्चम्यन्त सुबन्त' का ग्रहण होता है। तो पञ्चम्यन्त सुबन्त का भयप्रकृतिक (भयवाचक) सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास होता है।

उदाहरण – चोरभयम् – चोराद् भयम् इस लौकिक विग्रह में चोर ङसि भय सु इस अलौकिक विग्रह में पञ्चमी भयेन इस सूत्र से पञ्चम्यन्त का भयशब्द से समास होने पर समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् होने पर पञ्चम्यन्त के समासविधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने से उसकी(चोर शब्द की) उपसर्जनसंज्ञा तथा उपसर्जनसंज्ञक का पूर्वनिपात करके चोरभय इस अवस्था में समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करके विभक्ति कार्य करके (सु को अम्भावपूर्वरूपादि) चोरभयम् रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन 2.1.39

सूत्रवृत्ति – मूलग्रन्थ में वृत्ति नहीं है अनुवृत्यादि से वृत्ति इस प्रकार होगी (स्तोकान्तिकदूरार्थवाचकाः कृच्छ्रशब्दश्चेति पञ्चम्यन्ताः क्तान्तप्रकृतिकेन सुबन्तेन वा समस्यते, स च तत्पुरुषः।)

सूत्रानुवाद – स्तोकार्थक (स्वल्पार्थक), अन्तिकार्थक (समीपार्थक), दूरार्थक तथा कृच्छ्र शब्द ये पञ्चम्यन्त सुबन्त क्तान्तप्रकृतिक सुबन्त के साथ समास को प्राप्त करते हैं जिनकी तत्पुरुष संज्ञा होती है।

व्याख्या – स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि, क्तेन यह द्विपदात्मक सूत्र है। पञ्चमी भयेन सूत्र से पञ्चमी की अनुवृत्ति आती है। समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः – ये सब अधिकृत हैं। स्तोकश्च अन्तिकञ्च दूरञ्चेति स्तोकान्तिकदूराणि, इतरेतरद्वन्द्वः। स्तोकान्तिकदूराणि अर्था येषां ते स्तोकान्तिकदूरार्थाः, बहुव्रीहिसमासः। स्तोकान्तिकदूरार्थाः कृच्छ्रञ्चेति स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि, इतरेतरद्वन्द्वः। प्रत्ययग्रहणपरिभाषाद्वारा 'पञ्चमी' से तदन्त विधि हो कर वचनविपरिणाम से 'पञ्चम्यन्तानि' बन जाता है। 'क्त' से भी तदन्तविधि हो कर 'क्तान्तेन' उपलब्ध हो जाता है। तब यह सूत्रार्थ फलित होता है –

स्तोकार्थक (स्वल्पार्थक), अन्तिकार्थक (समीपार्थक), दूरार्थक तथा कृच्छ्र शब्द ये पञ्चम्यन्त सुबन्त क्तान्तप्रकृतिक सुबन्त के साथ समास को प्राप्त करते हैं जिनकी तत्पुरुष संज्ञा होती है।

सूत्र – पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः 6.3.2

सूत्रवृत्ति – अलुगुत्तरपदे। स्तोकान्मुक्तः। (अल्पान्मुक्तः)। अन्तिकादागतः। अभ्याशादागतः। दूरादागतः। (विप्रकृष्टादागतः)। कृच्छादागतः।।

सूत्रानुवाद – स्तोक आदियों से परे पञ्चमी का लुक् नहीं होता उत्तरपद परे हो तो।

व्याख्या – पञ्चम्याः, स्तोकादिभ्यः यह द्विपद सूत्र है। पञ्चम्याः यह षष्ठ्यन्त है पञ्चमी का ऐसा अर्थ होता है। स्तोकादिभ्यः पञ्चमी बहुवचन है अतः स्तोकादि से पर में यह अर्थ लब्ध होता है। अलुक् उत्तरपदे यह दो पद अलुगुत्तरपदे सूत्र से अनुवृत्त है। स्तोक आदिर्येषान्ते स्तोकादयः, तेभ्यः = स्तोकादिभ्यः बहुव्रीहि समासः। स्तोकादियों से यहां पूर्वसूत्र में प्रतिपादित स्तोकादियों का ग्रहण ही अभीष्ट है। न लुक अलुक्, नञ्तत्पुरुषः। उत्तरपदे का अर्थ उत्तरपद के पर में रहते। तो इस प्रकार से सूत्रार्थ फलित होता है – स्तोक आदियों से परे पञ्चमी का लुक् नहीं होता उत्तरपद परे हो तो।

उदाहरण – स्तोकान्मुक्तः – स्तोकात् मुक्तः इस लौकिक विग्रह में स्तोक ङसि मुक्त सु इस अलौकिक विग्रह में स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन सूत्र से समास करने पर समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् (ङसि तथा सु) प्राप्त होने पर पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः सूत्र से सुब्लुक् स्तोक से परे ङसि का लुक् निषेध होता है तथा सु मात्र का लोप होने पर स्तोक ङ्सि मुक्त इस अवस्था में ङसि के स्थान पर टाङसिङसामिनात्स्याः सूत्र से आत् आदेश करने तथा सवर्णदीर्घ करने पर स्तोकात् मुक्त इस अवस्था में तकार का जश्त्व दकार तथा परसवर्ण करने पर स्तोकान्मुक्त इस समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुविभक्त्यादिकार्य करके स्तोकान्मुक्तः रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – षष्ठी 2.2.8

सूत्रवृत्ति – सुबन्तेन प्राग्वत्। राजपुरुषः।

सूत्रानुवाद – षष्ठ्यन्त सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है जो कि तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या – यह एकपदात्मक सूत्र है। इसका अर्थ पूर्ण करने हेतु समर्थः पदविधिः, समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुष इनकी अनुवृत्ति करनी पड़ती है। प्रत्ययग्रहण परिभाषा से षष्ठी, सुप्, सुपा सबका अर्थ क्रमशः षष्ठ्यन्त, सुबन्त, सुबन्तेन हो जाता है। तब पूर्वोक्तार्थ लब्ध होता है कि – षष्ठ्यन्त सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है जो कि तत्पुरुष संज्ञक होता है।

उदाहरण – राजपुरुषः – राज्ञः पुरुषः इस लौकिक विग्रह में राजन् ङस् पुरुष सु इस अलौकिकविग्रह में षष्ठी इस सूत्र से षष्ठ्यन्त का समर्थ सुबन्त पुरुषशब्द से समास होने पर समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् होने पर षष्ठ्यन्त के

समासविधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने से उसकी(राजन् शब्द की) उपसर्जनसंज्ञा तथा उपसर्जनसंज्ञक का पूर्वनिपात करके राजन्पुरुष इस अवस्था में न लोप प्रातिपदिकान्तस्य सूत्र से राजन् शब्द के नकार का लोप होने पर राजपुरुष इस समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु प्रत्यय करके रुत्वविसर्गादि विभक्ति कार्य करके राजपुरुषः रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – पूर्वाऽपराऽधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे 2.2.1

सूत्रवृत्ति – अवयविना सह पूर्वादयः समस्यन्ते, एकत्वविशिष्टश्चेदवयवी। षष्ठीसमासाऽपवादः। पूर्व कायस्य – पूर्वकायः। अपरकायः। एकाधिकरणे किम् ? पूर्वश्छात्राणाम्।

सूत्रानुवाद – यदि अवयवी एकत्वसंख्याविशिष्ट हो तो तद्वाचक सुबन्त के साथ पूर्व अपर, अधर, उत्तर – ये चार सुबन्त विकल्प से समास को प्राप्त होते हैं और वह समास तत्पुरुषसञ्ज्ञक होता है। यह सूत्र षष्ठी सूत्र द्वारा प्राप्त समास का अपवाद है।

व्याख्या – यह त्रिपदात्मक सूत्र है। पूर्वाऽपराऽधरोत्तरम् यह पद प्रथमान्त है। एकदेशिना तृतीयान्त तथा एकाधिकरणे सप्तम्यन्त। समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः – ये सब पूर्वतः अधिकृत हैं। पूर्वञ्च परञ्च अधरञ्च उत्तरञ्च एषां समाहारः – पूर्वापराधरोत्तरम्, समाहारद्वन्द्वः। एकदेशः = अवयवः, सोऽस्यास्तीति एकदेशी, तेन = एकदेशिना, अवयविनेत्यर्थः। एकम् (एकत्वसंख्याविशिष्टम्) च तद् अधिकरणम् (द्रव्यम्) – एकाधिकरणम्, तस्मिन् = एकाधिकरणे, कर्मधारयसमासः। 'एकाधिकरणे' का सम्बन्ध 'एकदेशिना' के साथ है। अतः सूत्रार्थ हुआ एकत्वसंख्या विशिष्ट द्रव्य अर्थ में वर्तमान जो अवयवी तद्वाचक सुबन्त के साथ पूर्व, अपर, अधर और उत्तर इन सुबन्त का विकल्प से समास होता है और वह समास तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

षष्ठीसमास का अपवाद का तात्पर्य– अवयवी का, अवयव 'पूर्व' आदि के साथ, इस सूत्र द्वारा जो समास होता है वह षष्ठी समास का बाधक है। यदि षष्ठी समास होता तो षष्ठ्यन्त का प्रयोग पहले हो जाता। इस एकदेशि समास के विधायक सूत्र में प्रथमान्त निर्दिष्ट पद 'पूर्व' आदि अवयववाचक शब्द है। अतः प्रथमानिर्दिष्टं समासे उपसर्जनम् इस नियम से इनका प्रयोग पहले होता है। इसी कारण इस एकदेशि समास का विधान अपवाद स्वरूप किया गया है।

एकाऽधिकरणे किम् ? यहाँ प्रश्न होता है कि सूत्र में एकाधिकरणे क्यों कहा गया। इस समास में अवयवी का एकत्वसंख्याविशिष्ट अर्थात् एकवचनान्त होना आवश्यक है। अन्यथा 'पूर्वश्छात्राणाम' में समास होने लग जाता। यहाँ अवयवी छात्राणाम् बहुवचन होने से बहुत्त्वसंख्याविशिष्ट है, एकत्वसंख्याविशिष्ट नहीं। अतः यहाँ समास नहीं हुआ। यहाँ तत्पुरुष समास होने पर भी पूर्वपद का अर्थ ही प्रधान है। उसी का अन्य पदार्थों के साथ अन्वय होता है। अत एव समासप्रकरण की प्रथम इकाई में समास परिचयात्मक व्याख्यान में तत्पुरुष के लक्षण में प्रायः पद कहा गया था यह आपको ज्ञात है।

उदाहरण – पूर्वकायः – पूर्वं कायस्य यह लौकिक विग्रह है। पूर्व अम् काय ङस् इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से समास होता है। क्योंकि यहाँ काय अवयवी है और

एकवचनान्त भी, पूर्व शब्द अवयववाचक है। तदनन्तर प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक् आदि कार्य करने के उपरान्त समासशास्त्रस्थ प्रथमान्त पद बोध्य होने के कारण पूर्व शब्द का पहले निपात करने पर पूर्वकाय समुदाय की पुनः प्रातिपदिकत्व विभक्तिकार्य करके पूर्वकायः रूप सिद्ध होता है।

इसी तरह अपरं कायस्य = अपरकायः इत्यादि सिद्ध होते है।

सूत्र – अर्धं नपुंसकम् 2.2.2

सूत्रवृत्ति –समांशवाची अर्धशब्दो नित्यं क्लीबे, स प्राग्वत्। अर्धं पिप्पल्याः अर्धपिप्पली।

सूत्रानुवाद – सम अंश का वाचक अर्ध शब्द नित्य नपुंसक होता है। नित्य नपुंसक यह अर्ध–सुबन्त एकत्वविशिष्ट अवयवी के वाचक सुबन्त के साथ विकल्प से समास को प्राप्त करता है जो कि तत्पुरुष कहा जाता है।

व्याख्या – इस द्विपद सूत्र का अर्धम्, नपुंसकम् यह पदच्छेद है। पूर्वाडपराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे सूत्र से एकाधिकरणे, एकदेशिना यह पद अनुवृत्त होते हैं। समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः पूर्वतः अधिकृत हैं। तदनुसार सूत्रार्थ फलित होता है कि – एकत्वसंख्या विशिष्ट द्रव्य अर्थ में वर्तमान जो अवयवी, तद्वाचक सुबन्त के साथ नित्यनपुंसक 'अर्ध' सुबन्त का विकल्प से समास को प्राप्त होता है और वह समास (तत्पुरुषः) तत्पुरुषसञ्ज्ञक होता है। विशेष – 'अर्ध' बाद जब अंश (भाग) का वाचक हो तो पुंलिङ्ग या नपुंसक में प्रयुक्त होता है परन्तु समप्रविभाग (ठीक आधे भाग) का वाचक हो तब वह नित्यनपुंसक हुआ करता है। इस नित्यनपुंसक 'अर्ध' सुबन्त का एकत्वसंख्या–विशिष्ट अवयवी सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास हो जाता है।

उदाहरण – अर्धपिप्पली – अर्धं पिप्पल्याः इस लौकिकविग्रह में अर्ध सु पिप्पली ङस् इस अलौकिकविग्रह में समांशवाची अर्धशब्द है अतः 'अर्ध सु' का 'पिप्पली ङस्' इस एकत्वसंख्या विशिष्ट अवयवी सुबन्त के साथ प्रकृत अर्धं नपुंसकम् सूत्र द्वारा विकल्प से तत्पुरुषसमास हो जाता है। समासविधायक इस सूत्र में 'अर्धम्' पद प्रथमानिर्दिष्ट है अतः तद्बोध्य 'अर्ध सु' की उपसर्जनसञ्ज्ञा एवम् उपसर्जनं पूर्वम् से उसका पूर्वनिपात हो जाता है – अर्ध सु पिप्पली ङस्। अब समास की प्रातिपदिकसंज्ञा, तथा उसके अवयव सुपों का लुक् होकर प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय लाकर विभक्तिकार्य करके 'अर्धपिप्पली' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

सूत्र – सप्तमी शौण्डैः 2.1.40

सूत्रवृत्ति – सप्तम्यन्तं शौण्डादिभिः प्राग्वत्। अक्षेषु शौण्डः – अक्षशौण्डः इत्यादि।

सूत्रानुवाद – सप्तम्यन्त सुबन्त शौण्ड आदि सुबन्तों के साथ विकल्प से समास को प्राप्त करते हैं वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या – सप्तमी शौण्डैः यह द्विपदात्मक सूत्र है। समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः पूर्वतः अधिकृत हैं। सप्तमी से तदन्तविधि होकर सप्तम्यन्त का ग्रहण होता है। सप्तम्यन्त का शौण्डादि सुबन्तों के साथ समास विकल्प से होता है यह फलितार्थ है।

उदाहरण – अक्षशौण्डः – अक्षेषु शौण्डः इस लौकिक विग्रह में अक्ष सुप् शौण्ड सु इस अलौकिक विग्रह में सप्तमी शौण्डैः सूत्र से समास करने पर प्रातिपदिक संज्ञा तथा सुब्लुक् करके अक्ष शौण्ड इस अवस्था में समासविधायक सूत्र में सप्तम्यन्त के प्रथमानिर्दिष्ट होने से उपसर्जनसंज्ञकत्व के पूर्वनिपात करने पर अक्षशौण्ड समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुप्रत्यय करने पर विभक्ति कार्य करके अक्षशौण्डः रूप सिद्ध होता है।

द्वितीया–तृतीयेतित्यादियोगविभागादन्यत्रापि द्वितीयादिविभक्तीनां प्रयोगवशात् समासो ज्ञेयः ।

व्याख्या – यह वचन लघुसिद्धान्तकौमुदी में वरदराज ने पढा है अर्थात् 'द्वितीया, 'तृतीया' आदि का योगविभाग करने से अन्यत्र भी द्वितीयादि विभक्तियों का शिष्टप्रयोगवश समास जान लेना चाहिये। कहने का अभिप्राय यह है कि द्वितीया श्रितातीत..., तृतीया तत्कृतार्थेन.... इत्यादि सूत्रों द्वारा द्वितीयान्त आदि का पतित आदि सुबन्तों पर साथ समास का विधान किया गया है। किन्तु 'पतित' आदि से भिन्न पर साथ भी समास उपलब्ध होता है। उनकी सिद्धि के निमित्त 'द्वितीया' आदि को पृथक योग = सूत्र बना लिया जाएगा जिसका अर्थ सामान्यतया होगा – द्वितीयान्त का अन्य समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। इसमें 'पतित' आदि का सम्बन्ध नहीं रहेगा। अतएव इस योगविभाग द्वारा पतित आदि से भिन्न पदों के साथ समास सिद्ध हो जायेगा।

विशेष – इस स्थल तक भिन्न विभक्त्यन्तों का समास हुआ। इन्हें ही 'व्यधिकरण तत्पुरुष समास' कहा जाता है क्योंकि इनमें पूर्वपद तथा उत्तरपद का अर्थ भिन्न–भिन्न हुआ करता है। अब इसके बाद समानाधिकरण तत्पुरुष समास का निरूपण का जाएगा।

सूत्र –दिक्संख्ये संज्ञायाम् 2–1–50

सूत्रवृत्ति – पूर्वेषुकामशमी। सप्तर्षयः। संज्ञायामेवेति नियमार्थं सूत्रम्। तेनेह न – उत्तरा वृक्षाः, पञ्च ब्राह्मणाः।

सूत्रानुवाद – दिशावाची और संख्यावाची सुबन्त समानाधिकरण सुबन्तके साथ संज्ञा गम्य होने पर ही तत्पुरुष समास को प्राप्त करते हैं।

व्याख्या – इस द्विपदात्मक सूत्र में समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः पूर्वतः अधिकृत हैं। तथैव 'पूर्वकालैकसर्वजरतपुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन' सूत्र से 'समानाधिकरणेन' की अनुवृत्ति कर लेने पर सूत्र का अर्थ होता है कि – संज्ञा के विषय में दिशावाचक और संख्यावाचक सुबन्त का समानाधिकरण वाले सुबन्त के साथ समास होता है। इस समास को तत्पुरुष कहते है।

संज्ञायामेवेति नियमार्थम् से यहाँ यह बात ध्यान रखने योग्य है कि संज्ञा में ही दिशावाचक तथा संख्यावाचक पदों का समास होता है, अन्यथा नहीं, जैसे – उत्तरा वृक्षाः में 'उत्तरा' के सुबन्त होने पर भी संज्ञा न होने से समास नहीं होगा। इसी प्रकार पञ्च ब्राहाणाः में संज्ञा गम्यमान न होने के कारण संख्यावाचक पञ्च का सुबन्त ब्राह्मणाः के साथ समास नहीं होगा।

उदाहरण – पूर्वेषुकामशमी – 'पूर्वा च इषुकामशमी च' इस विग्रह में दिशावाचक सुबन्त 'पूर्वा' का समानाधिकरण वाले सुबन्त 'इषुकामशमी' के साथ प्रकृत सूत्र से समास होकर 'पूर्वेषुकामशमी' रूप बनता है।

सूत्र –तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च 2.1.51

सूत्रवृत्ति – तद्धितार्थे विषये, उत्तरपदे च परतः, समाहारे च वाच्ये, दिकसंख्ये प्राग्वत्। पूर्वस्यां शालायां भवः – पूर्वशाला, इति समासे जाते –

सूत्रानुवाद – तद्धित प्रत्यय के अर्थ का विषय होने पर, या उत्तरपद परे होने पर अथवा समाहार वाच्य होने पर (तीनों में से किसी एक दशा में) दिशा और संख्या के वाचक सुबन्त, समानाधिकरण सुबन्त के साथ मिलकर समास को प्राप्त करते हैं वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

व्याख्या – इस द्विपदात्मक सूत्र में समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः पूर्वतः अधिकृत हैं। यहाँ 'पूर्वकालैकसर्वजरत०' सूत्र से 'समानाधिकरणेन' की तथा दिक्संख्ये संज्ञायाम् सूत्र से 'दिक्संख्ये' की अनुवृत्ति करते हैं। तद्धितस्य अर्थः = तद्धितार्थः, षष्ठीतत्पुरुषसमासः। तद्धितार्थश्च उत्तरपदं च समाहारश्चेति तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारम्, तस्मिन् = तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे, समाहारद्वन्द्वसमासः। तद्धितार्थे, उत्तरपदे समाहारे चेत्यर्थः। एकाऽपि सप्तमी विषयभेदादत्र भिद्यते। यहां तीनों में एक ही सप्तमी विषय के भेद से भिन्न–भिन्न है। तद्धितार्थे में सप्तमी वैषयिक अधिकरण में हुई है अतः तद्धितार्थ के विषय में यह अर्थ होता है। उत्तरपदे में परसप्तमी है अतः 'उत्तरपद परे होने पर यह अर्थ होता है। 'समाहारे' में यह सप्तमी वाच्याधिकरण में हुई है अतः श्समाहार की वाच्यता में यह अर्थ होता है। तो इस प्रकार सम्पूर्ण सूत्र का अर्थ होगा – तद्धित के अर्थ के विषय में, उत्तरपद परे रहते और समाहार वाच्य होने पर दिशावाचक और संख्यावाचक सुबन्त का समानाधिकरण वाले सुबन्त के साथ समास होता है, और उस समास को तत्पुरुष कहा जाता है।

उदाहरण क्रमशः इस प्रकार होंगे –

1) **दिशावाचक – तद्धितार्थ –पूर्वस्यां शालायां भवः पौर्वशालः ।** उत्तरपद परे होने पर – पूर्वा शाला प्रिया यस्य पूर्वशालाप्रियः। समाहार वाच्य होने पर दिशावाचक शब्द का समास नहीं होता है।

2) **संख्यावाचक – तद्धितार्थ में – पञ्चानां नापितानाम् अपत्यम् पाञ्चनापितिः ।** उत्तरपद परे होने पर – पञ्च गावो धनं यस्य पञ्चगवधनः। समाहार वाच्य होने पर – पञ्चानां गवां समाहारः पञ्चगवम्।

उदाहरण – पौर्वशालः – पूर्वस्यां शालायां भवः पौर्वशालः। यहाँ तत्र भवः के अर्थ में वक्ष्यमाण दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः सूत्र से तद्धितप्रत्यय 'ञ' करना है अतः उसकी विवक्षामात्र में ही प्रकृत तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च सूत्र से दिशावाची 'पूर्वा ङि' का समानाधिकरण 'शाला ङि' के साथ समास हो जाता है। अब समास की प्रातिपदिकसंज्ञा होकर सुपो धातुप्रातिपदिकयोःसे उस के अवयव सुपों का लुक् करने पर 'पूर्वाशाला' इस स्थिति में अग्रिम वार्तिक प्रवृत्त होता है–

वार्तिक – सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पुंवद्भावः।

व्याख्या – समास आदि वृत्तिमात्र में सर्वनाम के स्थान पर पुंलिङ्ग की तरह रूप हो जाता है। इसे ही पुवद्भाव कहते हैं।

प्रकृत उदाहरण में 'पूर्वाशाला' इस स्थिति प्रकृत वार्तिक से पूर्वा को पुंवद्भाव से 'पूर्व' हो कर पूर्वशाला बना। अब इस से तद्धितार्थ के अनुरूप सप्तमी का एकवचन ङि प्रत्यय लाकर 'पूर्वशाला ङि' इस स्थिति में अग्रिमसूत्र द्वारा तत्र भवः के अर्थ में तद्धितप्रत्यय का विधान करते हैं –

सूत्र – दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः 4.2.107

सूत्रवृत्तिः – अस्माद् भवाद्यर्थे ञः स्यादसंज्ञायाम्।

सूत्रानुवाद – दिशावाचक शब्द जिस का पूर्वपद हो ऐसे प्रातिपदिक से परे भव आदि अर्थों में तद्धितसज्ञक 'ञ' प्रत्यय हो जाता है असञ्ज्ञा में।

व्याख्या – यहाँ शेषे सूत्र का अधिकार प्राप्त है। सूत्र का अर्थ होता है संज्ञा से भिन्न विषय में वर्तमान दिशा पूर्वपद प्रातिपदिक से शैषिक अर्थों = तद्धितार्थ आदि में ञ्–प्रत्यय होता है। 'ञ' मे ञकार इत्संज्ञक है, मात्र 'अ' शेष रह जाता है। 'पूर्वशाला' में पूर्वपद 'पूर्व' दिशावाचक है। अतः प्रकृत सूत्र द्वारा तद्धितार्थ में ञ अ, प्रत्यय होकर 'पूर्वशाला अ' की स्थिति में –

सूत्र – तद्धितेष्वचामादेः 7.2.117

सूत्रवृत्ति – ञिति णिति च तद्धितेऽचामादेरचो वृद्धिः स्यात्। 266– यस्येति च पौर्वशालः।

सूत्रानुवाद – जिस तद्धित प्रत्यय के ञकार या णकार की इत्संज्ञा हुई हो उसके पर में अङ्ग के अचों में जो आदि (प्रथम) हो उस अच् को वृद्धि हो।

व्याख्या – सूत्र का स्पष्ट अर्थ करने के लिये 'अचो ञ्णिति' सूत्र की तथा 'मृजेर्वृद्धिः' सूत्र से 'वृद्धिः' की अनुवृत्ति करनी होती है। 'अङ्गस्य' का यहाँ अधिकार प्राप्त है। अब सूत्र का अर्थ होता है कि ञित् और णित् तद्धित प्रत्यय परे होने पर (अङ्गस्य) अङ्ग के अचों में से आदि 'अच्' को वृद्धि हो।

'पूर्वशाला अ' में ञित् तद्धित प्रत्यय 'अ' (ञ) परे है। अतः प्रकृत सूत्र द्वारा आदि अच् 'उ' के स्थान पर वृद्धि 'औ' होकर 'प् औ र्वशाला अ = पौर्वशाला अ' की स्थिति में 'यस्येति च' सूत्र से पौर्वशाला के अन्तिम 'आ' का लोप हो जाने पर पौर्वशाल् अ की स्थिति में विभक्ति कार्य आदि हो जाने पर पौर्वशालः रूप सिद्ध होता है।

उत्तरपद पर में रहने का उदाहरण – पञ्च गावो धनं यस्येति त्रिपदे बहुव्रीहौ।

पञ्चगवधनः – पञ्च गावो धनं यस्य पञ्चन् जस् गो जस्, धन सु इस विग्रह में अनेकमन्यपदार्थे से त्रिपदबहुव्रीहि समास होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् करने पर पञ्चन् गो धन इस अवस्था में उत्तरपद 'धन' परे होने के कारण तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च सूत्र से जो पञ्चन् संख्यावाची पद का समानाधिकरण पद

गो के साथ अवान्तर तत्पुरुषसमास होकर प्रथमानिर्दिष्ट होने से पञ्चन् का पूर्वनिपात हो जाता है। परन्तु यह समास महाविभाषाधिकार से वैकल्पिक है अतः समासाभाव में समासान्त टच् प्रत्यय नहीं हो सकेगा अतः इस अवान्तर तत्पुरुष समास को नित्य करने हेतु वार्तिक पढते हैं –

द्वन्द्वतत्पुरुषयोरुत्तरपदे नित्यसमासवचनम् (वार्तिक) इसका तात्पर्य है कि उत्तरपद परे रहते द्वन्द्व या तत्पुरुष समास की नित्यता कही जाए। तो इस प्रकार अवान्तर तत्पुरुष समास को नित्य कर समासान्त टच् विधायक सूत्र पढते हैं –

सूत्र – गोरतद्धितलुकि 5.4.92

सूत्रवृत्ति – गोऽन्तात्तत्पुरुषाट्टच स्यात् समासान्तो न तु तद्धितलुकि। पञ्चगवधनः।

सूत्रानुवाद – यदि तद्धितलुक् न हआ हो तो, गो शब्द जिसके अन्त में ऐसे तत्पुरुष समास के परे समासान्त टच् प्रत्यय हो और वह तद्धितसंज्ञक भी हो।

व्याख्या – गोः अतद्धितलुकि यह पदच्छेद है। इस सूत्र में समासान्ताः का अधिकार प्राप्त है। तत्पुरुषस्याङ्गुलेःसे 'तत्पुरुषस्य' की अनुवृत्ति कर उसका तत्पुरुषात् ऐसा विभक्तिविपरिणाम करते हैं जो कि गोः का विशेषण है विशेषणात् तदन्तविधिः गोऽन्तात् तत्पुरुषात्। तथैव राजाहस्सखिभ्यष्टच् से 'टच्' की अनुवृत्ति कर लेने पर सूत्र का अर्थ होता है – यदि तद्धित प्रत्यय का लोप न हुआ हो तो 'गो' शब्द जिसके अन्त में हो ऐसे तत्पुरुष से समासान्त 'टच्' प्रत्यय हो। यहाँ अतद्धितलुकि में समास इस प्रकार है – तद्धितस्य लुक् = तद्धितलुक् (ष.त.), न तद्धितलुक् = अतद्धितलुक् (न.त.), तस्मिन् अतद्धितलुकि।

तत्पुरुष समास 'पञ्चगो' में 'गो' शब्द अन्त में है। अतः प्रकृत सूत्र द्वारा उससे टच् (अ), प्रत्यय हो जाने पर 'पञ्चगो अ' की अवस्था में 'एचोऽयावायावः' द्वारा 'ओ' के स्थान पर अवादेश कर 'पञ्च गव् अ = पञ्चगव' की स्थिति में अनेकमन्यपदार्थे से 'धनम्'(धन) सु , के त्रिपद बहुव्रीहि समास हो जाने पर 'पञ्चगवधन' रूप बन जाने पर पुनः प्रातिपदकसंज्ञादि विभक्तिकार्य करके 'पञ्चगवधनः' रूप सिद्ध होता है।

सूत्र –तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः 1.2.42

सूत्रानुवाद – समानाधिकरण तत्पुरुष समास कर्मधारयसंज्ञक होता है।

व्याख्या – यह त्रिपदात्मक सूत्र है। कर्मधारय समास जो कि तत्पुरुष का एक भेद है को परिभाषित करने के लिए इस सूत्र का प्रणयन किया है। समानाधिकरण से तात्पर्य यह है कि पूर्वपद और उत्तरपद दोनों का आधार (समान विभक्त्यन्त) हो अर्थात् अर्थात् वाच्य एक ही हो। जैसे नीलमुत्पलम् इति नीलोत्पलम्।

सूत्र – संख्यापूर्वो द्विगुः 2.1.52

सूत्रवृत्ति – तद्धितार्थेत्यत्रोक्तस्त्रिविधः संख्यापूर्वो द्विगुसंज्ञः स्यात्।

सूत्रानुवाद – तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च इस सूत्र से कहा गया त्रिविध संख्यापूर्वक समास द्विगुसंज्ञक होता है।

व्याख्या – संख्यापूर्वो द्विगुः यह द्विपदात्मक सूत्र है। संख्यापूर्वः पद में संख्या पूर्वः (पूर्ववयवः) यस्य सः ऐसा बहुव्रीहि समास है। 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' इस सूत्र में कथित त्रिविध–संख्यापूर्वसमास ही यहाँ अन्यपदार्थ है। तो इस प्रकार सूत्रार्थ होता है –तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च इस सूत्र से कहा गया त्रिविध संख्यापूर्वक समास द्विगुसंज्ञक होता है।

उदाहरण – पञ्चगवम् – 'पञ्चानां गवां समाहारः' इस विग्रह में समाहार के वाच्य होने पर 'तद्धितार्थो...' सूत्र से पञ्चानां तथा गवां का पूर्ववत् समास होकर प्रातिपदिकत्व, सुब्लुक् आदि कर 'पञ्च गव' यह बन जाने पर पूर्वपद के संख्यावाचक होने से संख्यापूर्वो द्विगुः सूत्र से उसकी 'द्विगु' संज्ञा होती है। अब इस स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है दृ

सूत्र –द्विगुरेकवचनम् 2.4.1

सूत्रवृत्ति– द्विग्वर्थः समाहारः एकवत् स्यात्।

सूत्रानुवाद – द्विगु समास का अर्थ समाहार एकत्व का प्रतिपादक हो।

व्याख्या– द्विगुः एकवचनम् यह पदच्छेद है। यहाँ समाहारे का ग्रहण किया जाता है। जिससे समाहार द्विगु एकवचनवाला होता है यह अर्थ फलित होता है। यहाँ एकवचन का अर्थ है –'एकार्थवाचक'।

समाहार अर्थ में होने के कारण 'पञ्चगव' समाहारद्विगु है। अतः द्विगुरेकवचनम् सूत्र द्वारा वह एकवचन वाला हुआ। अब 'पञ्चगव सु' की स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होगा–

सूत्र – स नपुंसकम् 2.4.17

सूत्रवृत्ति – समाहारे द्विगुर्द्वन्द्वश्च नपुसकं स्यात्। पञ्चानां गवां समाहारः पञ्चगवम्।

सूत्रानुवाद – समाहार में द्विगु व द्वन्द्व नपुंसक लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं।

व्याख्या – सः नपुंसकम् यह पदच्छेद है। सः से समाहार में हुए द्विगु और द्वन्द्व दोनों का ग्रहण किया जाता है। द्विगु समास के तत्पुरुष का भेद होने के कारण द्विगु के विषय में परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः का यह अपवाद है।

'पञ्चगव सु' समाहार द्विगु है। अतः स नपुंसकम् सूत्र से नपुंसक हो जाने पर प्रथमा के एकवचन में सु के स्थान पर अमादेश व पूर्वरूप करके 'पञ्चगवम्' रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – विशेषणं विशेष्येण बहुलम् 2.1.57

सूत्रवृत्ति – भेदकं भेद्येन समानाधिकरणेन बहुलं प्राग्वत्। नीलम् उत्पलम् नीलोत्पलम्। बहुलग्रहणात् क्वचिन्नित्यम् – कृष्णसर्पः। क्वचिन्न – रामो जामदग्न्यः।

सूत्रानुवाद – भेदक (विशेषण) सुबन्त, समानाधिकरण भेद्य (विशेष्य) सुबन्त के साथ बहुल प्रकार से समास को प्राप्त करता है। यह समास तत्पुरुष संज्ञक होता है। समानाधिकरण समास होने से यह कर्मधारय कहलाता है।

व्याख्या – विशेषणम्, विशेष्येण, बहुलम् यह त्रिपदात्मक सूत्र है। इस सूत्र में समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः पूर्वतः अधिकृत हैं। यहाँ 'पूर्वकालैकसर्वजरत०' सूत्र से 'समानाधिकरणेन' की अनुवृत्ति की जाती है। भेदक (विशेषण) सुबन्त, समानाधिकरण भेद्य (विशेष्य) सुबन्त के साथ बहुल प्रकार से समास को प्राप्त करता है। यह समास तत्पुरुष संज्ञक होता है। समानाधिकरण समास होने से यह कर्मधारय कहलाता है। विशेषण शब्द के प्रथमा निर्दिष्ट होने से उत्सर्गतः विशेषण का पूर्वनिपात होता है।

उदाहरणम् – नीलोत्पलम् – नीलम् उत्पलम् इस लौकिकविग्रह में नील सु उत्पल सु इस अलौकिकविग्रह में 'नील सु' इस विशेषण का 'उत्पल सु' इस विशेष्य के साथ विशेषणं विशेष्येण बहुलम् सूत्र द्वारा समास हो जाता है। समासविधायक इस सूत्र में विशेषणम् पद प्रथमानिर्दिष्ट है अतः नील सु की उपसर्जनसंज्ञा होकर उपसर्जनं पूर्वम् से उस का पूर्वनिपात हो जाता है – नील सु उत्पल सु अब समास की कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा, सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से प्रातिपदिक के अवयव सुप् प्रत्ययों का लुक् एवं आद् गुणः से गुण एकादेश करने पर नीलोत्पल इतना बन जाने पर परवल्लिङ्ग द्वन्द्वतत्पुरुषयोः के अनुसार यहां परपद अर्थात् 'उत्पल' के अनुसार समास का लिङ्ग होना चाहिये। 'उत्पल' नपुंसक है अतः समास का लिङ्ग भी नपुंसक होगा। प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय लाने पर अतोऽम् से उसे अम् आदेश तथा अमि पूर्वः से पूर्वरूप करने पर 'नीलोत्पलम्' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

ध्यातव्य – बहुल प्रकार से प्रवृत्त होने के कारण यह समास कहीं पर नित्य होता है। जैसे – कृष्णसर्पः – यहाँ प्रकिया दिखाने के लिए ही कृष्णः सर्पः ऐसा लौकिक विग्रह दिखाया जाता है। कृष्ण सु सर्प सु ऐसा अलौकिकविग्रह दशा में समासादिनिमित्त सुब्लुक्–पूर्वनिपातादि कार्य करके कृष्णसर्पः रूप सिद्ध होता है। वस्तुतः कृष्णसर्प जातिविशेष में रूढ होने के कारण इसका विग्रह नहीं होता।

इसी तरह बहुल ग्रहण के कारण तो कहीं कहीं यह समास होता ही नहीं। जैसे – रामो जामदग्न्यः। यहाँ विशेषण विशेष्य दोनों समानाधिकरण में विद्यमान है तथापि समास नहीं होता।

सूत्र –उपमानानि सामान्यवचनैः 2.1.55

सूत्रवृत्ति – घन इव श्यामः – घनश्यामः।

सूत्रानुवाद – उपमानवाचक सुबन्त, समानधर्म को कह चुके हुए समानाधिकरण सुबन्तों के साथ समास को प्राप्त होते हैं और वह समास तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

व्याख्या – उपमानानि, सामान्यवचनैः यह द्विपदात्मक सूत्र है। समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन सूत्र से होती है। समासः, सुप्, सह सुपा, तत्पुरुषः ये सब पूर्वतः अधिकृत हैं। उपमीयते सदृशतया परिच्छिद्यते यैस्तानि उपमानानि, करणे ल्युट्। जिन के द्वारा किसी वस्त्वन्तर की तुल्यता या समानता दर्शाई जाती है उन को उपमान कहते हैं। समानस्य भावः सामान्यम्, साधारणो धर्म इत्यर्थः। सामान्यम् उक्तवन्त इति सामान्यवचनाः, तैः = सामान्यवचनैः। उपमान आर उपमेय में रहने वाली समानता (समानधर्म) को 'सामान्य' कहते हैं। जो शब्द पहले सामान्य (समानधर्म) को कह कर पुनः मत्वर्थीय अच् प्रत्यय' के बल से या

उपचार (आरोप) के कारण उस सामान्य धर्म से युक्त द्रव्य को कहने लगे तो उसे 'सामान्यवचन' कहते हैं। यथा – घन इव श्यामः (श्रीकृष्णः)। श्रीकृष्ण बादल की तरह श्यामवर्ण वाला है। यहाँ 'घन' (बादल) उपमान है। श्रीकृष्ण उपमेय है। उपमान और उपमेय में सामान्य श्यामत्व है। श्यामशब्द पहले तो श्यामगुण का वाचक होता है परन्तु बाद में श्यामगुणोऽस्त्यस्येति श्यामः (मत्वर्थीयोऽच्प्रत्ययः) इस प्रकार श्यामगुण वाले पदार्थ (श्रीकृष्ण) को कहने लग जाता है, तो अब यह श्यामशब्द सामान्यवचन हुआ। यह तत्पुरुष समास समानाधिकरण समास होने के कारण तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारय सूत्र से कर्मधारयसंज्ञक होता है।

उदाहरण – घनश्यामः – धन इव श्यामः इस लौकिकविग्रह में घन सु श्याम सु इस अलौकिकविग्रह में उपमानानि सामान्यवचनैः सूत्र द्वारा तत्पुरुषसमास (कर्मधारय) हो जाने पर समाससूत्र में 'उपमानानि' पद प्रथमानिर्दिष्ट है अतः तद्बोध्य 'घन सु' की उपसर्जनसंज्ञा होकर उपसर्जनं पूर्वम् से उस का पूर्वनिपात हो जाता है कृ घन सु श्याम सु अब कृत्तद्धितसमासाश्च से समास की प्रातिपदिकसंज्ञा, सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से समास के अवयव सुपों का लुक् होने पर घनश्याम समुदाय की पुनः प्रातिपदिकत्वात् सुबुत्पत्ति के प्रसङ्ग में प्रथमा के एकवचन की विवक्ष में 'सु' प्रत्यय लाकर विभक्ति कार्य रुत्वविसर्ग कर 'घनश्यामः' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

वार्तिक–शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसङ्ख्यानम्

अनुवाद – शाकप्रियः पार्थिवः – शाकपार्थिवः। देवपूजको ब्राह्मणः – देवब्राह्मणः।

व्याख्या – शाकपार्थिव आदि शब्दों की सिद्धि के लिये (पूर्वपद में स्थित) उत्तरपद के लोप का उपसंख्यान करना चाहिये। शाकपार्थिव आदि शब्दों की सिद्धि दो बार समास करने से होती है। पहले दो पदों में समास कर एक पद बना लिया जाता है। पुनः इस एक पद का अन्य समानाधिकरण पद के साथ कर्मधारयसमास किया जाता है। इस कर्मधारयसमास में पूर्व समस्त हए पद के अन्तर्गत उत्तरपद का प्रकृतवार्तिक से लोप किया जाता है। यथा – 'शाक' और 'प्रिय' पदों का अनेकमन्यपदार्थे से बहुव्रीहिसमास हो कर शाकः प्रियो यस्य सः = शाकप्रियः यह एकपद बन जाता है। अब इसका 'पार्थिवः' के साथ कर्मधारयसमास करने में पूर्वसमस्तपद (शाकप्रिय) के उत्तरपद 'प्रिय' का लोप हो कर 'शाकपार्थिवः' प्रयोग बन जाता है।

इसी प्रकार देवपूजको ब्राह्मणः = देवब्राह्मणः की सिद्धि होती है। पहले देवानां पूजको देवपूजको यह षष्ठी तत्पुरुषसमास कर लिया जाता है। ततः पश्चात् देवपूजकः का ब्राह्मणः पद के साथ कर्मधारय समास किया जाता है। तब प्रकृत वार्तिक से देवपूजक शब्द के उत्तरपद पूजक का लोप करके देवपूजक रूपसिद्ध होता है। इसी प्रकार के उत्तरपद का लोपविशेष के लिए यह वार्तिक पढी गई है। समास तो वस्तुतः विशेषणं विशेष्येण बहुलम् से होता है।

10.3 कतिपय उदाहरणों की रूपसाधन–प्रक्रिया

आशातीतः – आशाम् अतीतः इस लौकिक विग्रह में आशा अम् अतीत सु इस अलौकिक विग्रह में "द्वितीया श्रिताऽतीतपतितगताऽत्यस्तप्राप्तापन्नैः" इस सूत्र से तत्पुरुष समास करने पर समासंज्ञा होने पर कृत्तद्धितसमासाश्च सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा

सुपो धातुप्रातिपदिकयोः सूत्र से सुब्लुक् करने पर आशा अतीत इस अवस्था में प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् इस सूत्र से समास विधायक सूत्र में द्वितीया शब्द के प्रथमानिर्दिष्ट होने से द्वितीयान्त की उपसर्जन संज्ञा होने पर उपसर्जनं पूर्वम् सूत्र से द्वितीयान्त का पूर्वनिपात करने पर आशा अतीत इस अवस्था में सवर्णदीर्घ करने के बाद आशातीत इस समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु प्रत्यय विभक्तिकार्य द्वारा रुत्वविसर्ग होने पर आशातीतः रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार नरकं पतितः = नरकपतितः, स्वर्गं गतः = स्वर्गगतः, कूपम् अत्यस्त (फेंका हुआ) = कूपात्यस्तः, सुखं प्राप्तः = सुखप्राप्तः, संकटम् आपन्नः = संकटापन्नः इत्यादि अन्य उदाहरणों की प्रकिया भी पूर्ववत् है।

धान्यार्थः – धान्येन अर्थः (यहाँ तृतीयान्त सुबन्त धान्येन का सुबन्त अर्थ–शब्द के साथ समास होता है) इस लौकिक विग्रह में धान्य टा अर्थ सु इस अलौकिक विग्रह में तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन सूत्र से समाससंज्ञा होने पर पूर्ववत् प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् करने पर धान्य अर्थ इस अवस्था में तृतीयान्त का समासविधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने के कारण उपसर्जन संज्ञा तथा उसका पूर्वनिपात करने पर धान्य अर्थ इस अवस्था में सवर्णदीर्घ के पश्चात् धान्यार्थ बनने पर समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा विभक्त्यादिकार्य करने पर धान्यार्थ रूप सिद्ध होता है।

करणकारक में तृतीयान्त का उदाहरण – नखभिन्नः– नखैः भिन्नः इस लौकिक विग्रह में नख भिस् भिन्न सु इस अलौकिकविग्रह में कर्तृकरणे कृता बहुलम् सूत्र द्वारा बहुल प्रकार से समास हो जाता है। समासविधायक इस सूत्र में अनुवर्तित 'तृतीया' पद प्रथमानिर्दिष्ट है अतः प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से तद्बोध्य 'नख भिस्' की उपसर्जनसंज्ञा और उपसर्जनम् पूर्वम् से उस का पूर्वनिपात हो जाने पर नख भिन्न इस समास समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च प्रातिपदिकसंज्ञा, सुपो धातुप्रातिपदिकयोः द्वारा उस के अवयव (भिस् और सु) का लुक् करने पर नखभिन्न समुदाय की पुनः प्रातिपदिकत्व तथा प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करके विभक्त्यादि कार्य करके नखभिन्नः रूप सिद्ध होता है।

गोहितम् – गोभ्यो हितम् इस लौकिक विग्रह में गो भ्यस् हित सु इस अलौकिक विग्रह में चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित.... इस सूत्र से चतुर्थ्यन्त का हितशब्द से समास होने पर समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् होने पर चतुर्थ्यन्त के समासविधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने से उसकी(गो शब्द की) उपसर्जनसंज्ञा तथा उपसर्जनसंज्ञक का पूर्वनिपात करके गो हित इस अवस्था में समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु प्रत्यय करके विभक्ति कार्य करके (सु को अम्भावपूर्वरूपादि) गोहितम् रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार भूताय बलिः = भूतबलिः, गोभ्यः सुखम् = गोसुखम्, गोभ्यः रक्षितम् = गोरक्षितम् इत्यादि उदाहरणों की प्रक्रिया है।

अन्तिकादागतः – अन्तिकाद् आगतः इस विग्रह में पञ्चम्यन्त सुबन्त 'अन्तिकाद्' का सुबन्त 'क्त' प्रत्ययान्त 'आगतः' के साथ पूर्ववत् (स्तोकान्मुक्त की प्रक्रिया की तरह) समास होकर 'अन्तिकादागतः' रूप बनता है।

इसी प्रकार दूरार्थवाचक – जैसे – 'अभ्याशादागतः' में 'अभ्याशाद् आगतः' इस विग्रह में दूरीवाचक सुबन्त 'अभ्याशाद्' का 'क्त' प्रत्ययान्त 'आगतः' के साथ समास होता है। इसी तरह दूराद् आगतः = दूरादागतः इत्यादि रूप भी सिद्ध होते हैं।

समानतया कृच्छ्रशब्द के उदाहरण में भी – 'कृच्छ्राद् आगतः' इस विग्रह में पूर्ववत् समास होकर 'कृच्छ्रादागतः' रूप बनता है।

सप्तर्षयः – 'सप्त च ते ऋषयः' इस लौकिकविग्रह में सप्तन् जस् ऋषि जस् इस अलौकिक विग्रह में दिक्संख्ये संज्ञायाम् सूत्र से संख्यावाचक सुबन्त समानाधिकरण वाले सुबन्त 'ऋषयः' के साथ समास करने पर समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् करने पर सप्तन् ऋषि इस अवस्था में सप्तन् के नकार का लोप करके सप्तर्षि इस समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा बहुवचन विवक्षा में जस् प्रत्यय तथा शेषविभक्ति कार्य करके सप्तर्षयः रूप सिद्ध होता है।

पञ्चगवम् – पञ्चानां गवां समाहारः इस लौकिकविग्रह में पञ्चन् आम् गो आम् इस अलौकिकविग्रह में समाहार अर्थ में तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च सूत्र द्वारा 'पञ्चन् आम्' इस संख्यावाचक सुबन्त का 'गो आम्' इस समानाधिकरण सुबन्त के साथ तत्पुरुषसमास हो जाता है। संख्यापूर्वो द्विगुः सूत्र से इस समास की द्विगुसंज्ञा भी रहती है। समासविधायक सूत्र में दिक्संख्ये यह पद अनुवर्तित होता है जो प्रथमानिर्दिष्ट है अतः तद्बोध्य 'पञ्चन् आम्' की उपसर्जनसंज्ञा होकर उपसर्जनं पूर्वम् सूत्र से उस का पूर्वनिपात हो जाता है कृ पञ्चन् आम् गो आम् अब कृत्तद्धितसमासाश्च से समग्र समाससमुदाय की प्रातिपदिकसंज्ञा, सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से प्रातिपदिक के अवयव सुपों का लुक् तथा पञ्चन के आगे लुप्त हुई आम् विभक्ति को प्रत्ययलक्षणद्वारा मानकर पदत्व के कारण न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य सूत्र से पञ्चन् के नकार का लोप हो कर 'पञ्चगो' इस स्थिति में गोरतद्धितलुकि से समासान्त टच् (अ) प्रत्यय करने पर अनुबन्धलोप तथा एचोऽयवायावः से ओकार को अव् आदेश करने से पञ्चगव इस स्थिति में समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके स्वादि उत्पत्ति विवक्षा में द्विगुरेकवचनम् सूत्र से प्रथमा एकवचन मात्र की प्राप्ति से सु–प्रत्यय करके स नपुंसकम् सूत्र द्वारा समाहार द्विगु का नपुंसकलिङ्ग में प्रयोग इष्ट होने के कारण सु को अम् तथा पूर्वरूपादि कार्य करके पञ्चगवम् रूप सिद्ध होता है।

बोध प्रश्न

क) बहुविकल्पीय प्रश्न –

1. "कर्तृकरणे कृता बहुलम्" सूत्र में कृता का अर्थ है ?
   (क) कृदन्तेन (ख) कृदन्तस्य (ग) कृत् प्रत्ययेन (घ) कृत् प्रत्ययस्य
2. "तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन" सूत्र में तत्कृत का प्रयोजन है ?
   (क) अक्ष्णा काणः में समास करना (ख) अक्ष्णा काणः में समास वारण
   (ग) धान्येन अर्थः में समास करना (घ) पूर्वोक्त में कोई नहीं
3. "पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः" सूत्र है –
   (क) पञ्चमी तत्पुरुष विधायक (ख) टच् प्रत्यय विधायक
   (ग) विभक्ति का अलुग् विधायक (घ) सुब्लुक् विधायक

4. "दिक्संख्ये संज्ञायाम्" सूत्र है ?

   (क) अतिदेशसूत्र (ख) विधिसूत्र (ग) अधिकारसूत्र (घ) नियमसूत्र

5. "गोरतद्धितलुकि" सूत्र से होता है –

   (क) तद्धितलुक् (ख) टच् प्रत्यय (ग) गोशब्द को ह्रस्व (घ) वृद्धि

ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें ।

1. द्वितीया श्रितातीत .....।
2. अर्थेन नित्यसमासो .....।
3. .....मेकदेशिनैकाधिकरणे।
4. भेदकं .....बहुलं प्राग्वत्।
5. शाकपार्थिवादिनां .....लोपस्योपसंख्यानम्।

ग) सही/गलत का चयन करें ।

1. द्विगु की भी तत्पुरुषसंज्ञा होती हैं – सही/गलत
2. तृतीया समास में कृदन्त के ग्रहण में गतिकारकपूर्वक का ग्रहण नहीं होता – सही/गलत
3. रन्धनाय स्थाली में भी तदर्थ के कारणसमास होता है – सही/गलत
4. "तद्धितेष्वचामादेः" सूत्र आदि अच् की वृद्धि करता है – सही/गलत
5. "भेदकम्" का अर्थ विशेषण होता है – सही/गलत

अभ्यास प्रश्न

1. चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः सूत्र में तदर्थ से प्रकृतिविकृतिभाव को लेने का क्या फल है ?
2. "अर्धं नपुंसकम् सूत्र के द्वारा किस अर्ध शब्द के समास का विधान किया गया है?
3. "दिक्संख्ये संज्ञायाम्" सूत्र का सूत्रार्थ लिखे।
4. तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च सूत्र का सूत्रार्थ निरूपण करें।
5. पञ्चगवधनः रूपसाधन करें।

10.4 सारांश

प्रिय छात्रों इस समास सम्बन्धी द्वितीय पाठ में आपने तत्पुरुष समास, कर्मधारय समास व द्विगु समास के बारे में अध्ययन किया। सर्वप्रथम तत्पुरुष के अवान्तर प्रकारों द्वितीया–तृतीया–चतुर्थी–पञ्चमी–षष्ठी–सप्तमी तत्पुरुष समासों का क्रमशः अध्ययन सोदाहरण सूत्रव्याख्या, रूपसाधन प्रक्रिया के साथ किया। उसके बाद समानाधिकरण समास के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। उसी समानाधिकरण में संख्यापूर्व होने पर द्विगुसंज्ञा होती है। तत्पुरुष की ही द्विगुसंज्ञा का विधान समासान्त आदि के लिए किया जाता है यह भी आपने सोदाहरण विस्तार से जाना। साथ ही समाहार द्विगु एकवचन और नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होता है इसका नियम भी आपने जाना। उसके बाद समानाधिकरण समास कर्मधारय के सूत्रों का विवेचन उदाहरणपुरस्सर विस्तार से किया।

10.5 शब्दावली

गुणवचन – यह शब्द तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन सूत्र में आया है। गुणमुक्तवान् इति गुणवचनः (शब्दः)। जो शब्द गुण को पहले कह कर अब द्रव्यवाचक हो चुका हो उसे यहां 'गुणवचन' कहा गया है। यथा 'श्वेत' शब्द श्वेतगुण का वाचक होकर अभेदोपचार के कारण या गुणवचनेभ्यो मतुबो लुगिष्टः (वार्तिक) के द्वारा मतुप् के लुक के कारण जब श्वेतगुणविशिष्ट पदार्थ को कहने लगता है तब वह 'गुणवचन' कहलाता है।

बहुलम् – कहीं प्रवृत्त होना, कहीं नहीं होना, कहीं विकल्प से होना और कहीं कुछ अन्य प्रकार से कार्य का सम्पन्न होना ही बहुल कहलाता है। जिसका प्रसिद्ध श्लोक है – क्वचित् प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद् विभाषा क्वचिदन्यदेव। विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति।।

स्तोकार्थक – स्वल्पार्थक।

अन्तिकार्थक – समीपार्थक।

कृच्छ्र –कष्ट।

समांश –किसी भी वस्तु का ठीक आधा होना।

समानाधिकरण – समानम् एकम् अधिकरणम् ययोः तत् समानाधिकरण अर्थात् जिनका दो पदार्थों का समान अधिकरण = एक ही वाच्य हो वह समानाधिकरण कहलाते है।

भेदक – भेदक, व्यावर्तक, विशेषण यह पर्याय शब्द हैं। विशेषण को भेदक इसलिए कहते हैं क्योंकि वह किसी वस्तु को अन्य पदार्थ से भिन्न करता है। जैसे लाल घट कहने पर लाल रंग उससे विशिष्ट घट को अन्य पीत, हरित, कृष्ण आदिघटों से भिन्न करता है। इसी भेद करने वाले गुण के कारण विशेषण को भेदक कहते हैं।

भेद्य – विशेष्य को कहते हैं। जिसको किसी विशेषता के कारण विशेषण = भेदक के द्वारा अन्य से भिन्न दिखाया जाए उसे भेद्य कहा जाता है।

10.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी आचार्यभीमसेनशास्त्रीकृत भैमीव्याख्यासहिता (द्वितीय भाग)
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य सुरेन्द्रदेवस्नातकशास्त्रीकृत आशुबोधिनी हिन्दीव्याख्या सहिता
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – पं. ईश्वरचन्द्रकृत सोमलेखा हिन्दीव्याख्यासहिता
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य अर्कनाथचौधरीकृत चन्द्रकला संस्कृ हिन्दी–व्याख्याद्वयसहिता

10.7 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

क) बहुविकल्पीय प्रश्न

1– (क), 2 – (ख), 3 – (ग), 4 – (घ), 5 – (ख)

ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति

1 – पतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः

2 – विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम्

3 – पूर्वापराधरोत्तर

4 – भेद्येन समानाधिकरणेन

5 – सिद्धये उत्तरपदलोप।

ग) सही/गलत का चयन

1. सही 2. गलत 3. गलत 4. सही 5. सही

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY